" सर्वज्ञ भगवान की सिद्धि "

सर्वज्ञ ⇒ सर्व + ज्ञ अर्थात सब को जानने वाला। जो तीनलोक, तीनकाल के समस्त द्रव्यों उनके गुणों उनकी पर्यायों तथा पर्यायों के अविभागी प्रतिच्छेदों को स्पष्ट रूप से हाथ में रखे आंवले की भांति प्रत्यक्ष एकसमय में जानता है वह सर्वज्ञ है

① सर्वज्ञ की सामान्य से सिद्धि ⇒ सर्वज्ञता अर्थात ज्ञानकी पूर्ण अवस्था तथा ज्ञान, दर्शन आत्माके असाधारण लक्षण है जो की बाकी 5 द्रव्यों में नहीं पाये जाते मात्र जीवद्रव्य में ही पाये जाते है अर्थात आत्मा सर्वज्ञ स्वभावी है। तथा ज्ञान का कार्य है स्व-पर को जानना और स्वभाव सदाकाल सर्वांश अमर्यादित होता है अतः जिस जीव ने अपने ज्ञानस्वभाव की पूर्णता को प्राप्त कर लिया है वह जीव सर्वज्ञ है।

② सर्वज्ञ की विशेष रूप से सिद्धि ⇒ सभी संप्रदाय के लोग अपने-अपने भगवान को सर्वज्ञ कहते है परंतु सभी में सर्वज्ञ का स्वरूप भिन्न-भिन्न रूप से बताया गया है तथा एक मत में ही भिन्न-भिन्न शास्त्रों में अलग-अलग कथन देखने को मिलता है एक शास्त्र में भी परस्पर विरुद्ध कथन देखने में आता है तो सर्वप्रथम तो सर्वज्ञ का स्वरूप सदाकाल एक ही होता है तथा सर्वज्ञ की वाणी में कभी परस्पर विरोध नहीं होता अतः इस दृष्टि से देखें तो स्वतः ही बाकि के सर्वज्ञ का स्वरूप मिथ्या साबित होता है तथा असंयमी, रागी-द्वेषि जीव को ज्ञानकी पूर्णता का प्रश्न ही नहीं उठता अतः एकमात्र पूर्ण वीतरागी समस्त प्रकार के विकारों से रहित पूर्णनिर्विकल्प एकमात्र जिनेन्द्रदेव ही सर्वज्ञ है क्योंकि उनके ज्ञान में समस्तलोक जैसा है वैसा दिखता है तथा वो फिरभी उससे निर्लेप ही रहते है।

Page No.:
Date:

तर्क ✩ यदि कोई सर्वज्ञ की सिद्धि में ऐसा प्रश्न करे की सर्वज्ञ नाम की कोई वस्तु ही नहीं होती तो सामान्य सी बात है कि यहां नहीं होती की कहीं नहीं होती? इसकाल में नहीं होती या तीनों कालों में नहीं होती? और यदि नहीं होती तो उसने कैसे जाना? क्योंकि बिना जाने अगर कहा तो तो वह मिथ्या बात है और यदि जानके कहा तो वह ही सर्वज्ञ है।

उदा. ✩ पुराणों में तीर्थंकरों का जीवन परिचय, आदिनाथ भगवान द्वारा मारीची के भवों का वर्णन, नेमिनाथ भगवान द्वारा द्वारिका के जलने का वर्णन इत्यादि अनेक उदा. से भी स्पष्ट होता है कि सर्वज्ञनाम की वस्तु अस्ति सता हो

③ सर्वज्ञ को जानने से लाभ ⇒

सर्वज्ञ तो वास्तव में जिनागम के आधार है उनके वास्तविक स्वरूप को समझे बिना उनके द्वारा कथित जिनागम में श्रद्धा नहीं हो सकती तथा उनका स्वरूप समझकर उनके जैसा ज्ञान उनके जैसा स्वभाव मेरा भी है अतः हमें स्वतः अपनी महिमा आती है तथा निजात्मा की और झुकाव होता है।

→ Rahul A. Jain